Series : OSS/1

Code No. कोड नं. **29/1/1**

Roll No. रोल नं.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ 7 हैं।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **14** प्रश्न हैं।
- **कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।**
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (ऐच्छिक)
HINDI (Elective)

निर्धारित समय : 3 घंटे] *[अधिकतम अंक : 100*

Time allowed : 3 hours] *[Maximum marks : 100*

खंड – 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

विश्व के प्राय: सभी धर्मों में अहिंसा के महत्त्व पर बहुत प्रकाश डाला गया है । भारत के सनातन हिंदू धर्म और जैन धर्म के सभी ग्रंथों में अहिंसा की विशेष प्रशंसा की गई है । 'अष्टांगयोग' के प्रवर्तक पतंजलि ऋषि ने योग के आठों अंगों में प्रथम अंग 'यम' के अन्तर्गत 'अहिंसा' को प्रथम स्थान दिया है । इसी प्रकार 'गीता' में भी अहिंसा के महत्त्व पर जगह-जगह प्रकाश डाला गया है । भगवान महावीर ने अपनी शिक्षाओं का मूलाधार अहिंसा को बताते हुए 'जियो और जीने दो' की बात कही है । अहिंसा मात्र हिंसा का अभाव ही नहीं, अपितु किसी भी जीव का संकल्पपूर्वक वध नहीं करना और किसी जीव या प्राणी को अकारण दुख नहीं पहुँचाना है । ऐसी जीवन-शैली अपनाने का नाम ही 'अहिंसात्मक जीवन शैली' है ।

अकारण या बात-बात में क्रोध आ जाना हिंसा की प्रवृत्ति का एक प्रारम्भिक रूप है । क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है; वह उसकी बुद्धि का नाश कर उसे अनुचित कार्य करने को प्रेरित करता है, परिणामत: दूसरों को दुख और पीड़ा पहुँचाने का कारण बनता है । सभी प्राणी मेरे लिए मित्रवत् हैं । मेरा किसी से भी वैर नहीं है, ऐसी भावना से प्रेरित होकर हम व्यावहारिक जीवन में इसे उतारने का प्रयत्न करें तो फिर अहंकारवश उत्पन्न हुआ क्रोध या द्वेष समाप्त हो जाएगा और तब अपराधी के प्रति भी हमारे मन में क्षमा का भाव पैदा होगा । क्षमा का यह उदात्त भाव हमें हमारे परिवार से सामंजस्य कराने व पारस्परिक प्रेम को बढ़ावा देने में अहम् भूमिका निभाता है ।

हमें ईर्ष्या तथा द्वेष रहित होकर लोभवृत्ति का त्याग करते हुए संयमित खान-पान तथा व्यवहार एवं क्षमा की भावना को जीवन में उचित स्थान देते हुए अहिंसा का एक ऐसा जीवन जीना है कि हमारी जीवन-शैली एक अनुकरणीय आदर्श बन जाए ।

(क) अहिंसात्मक जीवन शैली से लेखक का क्या तात्पर्य है ? 2

(ख) कैसी जीवन-शैली अनुकरणीय हो सकती है ? 2

(ग) "जियो और जीने दो" की बात किसने कही ? इसका आशय स्पष्ट कीजिए । 2

(घ) अहिंसा में क्रोध और द्वेष को छोड़ने की बात पर लेखक ने क्यों बल दिया है ? 2

(ङ) क्षमा का भाव पारिवारिक जीवन में क्या परिवर्तन ला सकता है ? 2

(च) 'क्रोध अंधा बना देता है' – का आशय स्पष्ट कीजिए और बताइए कि लेखक ने इसे हिंसा की प्रवृत्ति का प्रारम्भिक रूप क्यों कहा है ? 2

(छ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए – अनुचित, पारस्परिक । 1

(ज) विशेषण बनाइए – उन्नति, क्षमा । 1

(झ) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । 1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए **पाँचों** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : $1 \times 5 = 5$

"धर्मराज, यह भूमि किसी की नहीं क्रीत है दासी,
हैं जन्मना समान परस्पर इसके सभी निवासी ।
है सबका अधिकार मृत्तिका पोषक-रस पीने का,
विविध अभावों से अशंक होकर जग में जीने का ।
सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीरण
बाधा-रहित विकास, मुक्त आशंकाओं से जीवन ।
लेकिन, विघ्न अनेक अभी इस पथ में पड़े हुए हैं,
मानवता की राह रोक कर पर्वत अड़े हुए हैं ।
न्यायोचित सुख सुलभ नहीं जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक शान्ति कहाँ इस भव को ?
जब तक मनुज-मनुज का यह सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा ।
था पथ सहज अतीव, सम्मिलित हो समग्र सुख पाना,
केवल अपने लिए नहीं, कोई सुख-भाग चुराना ।"

(क) "यह धरती किसी की खरीदी हुई दासी नहीं है" – इस कथन से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(ख) इस धरती पर सभी को क्या-क्या अधिकार प्राप्त हैं ?

(ग) भाव स्पष्ट कीजिए – 'सबको मुक्त प्रकाश चाहिए, सबको मुक्त समीरण ।'

(घ) आज मानव-समाज में किस बात को लेकर संघर्ष हो रहा है ?

(ङ) मनुष्य इस धरती पर केवल अपने लिए ही सुख क्यों चाहता है ?

अथवा

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी ।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी ।।

यह समाधि, यह लघु समाधि, है
झाँसी की रानी की ।
अंतिम लीला-स्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की ।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी ।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है वह स्मृति-शाला-सी ।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी ।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी ।।

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से ।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से ।।

रानी से भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी ।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिनगारी ।।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर लिखिए : **3 + 3 = 6**

(क) 'मैंने देखा, एक बूँद', कविता के आधार पर 'सागर' और 'बूँद' का आशय स्पष्ट कीजिए ।

(ख) "कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मूंदि रहए दु नयान" – पद में चित्रित वियोगिनी नायिका की मनोदशा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ।

(ग) 'एक कम' कविता में हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए ।

9. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **दो** का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : **3 + 3 = 6**

(क) बरसाती आँखों के बादल – बनते जहाँ भरे करुणा-जल
लहरें टकराती अनंत की – पाकर जहाँ किनारा ।
हेम कुंभ ले उषा सवेरे – भरती ढुलकाती सुख मेरे ।
मदिर ऊँघते रहते जब – जगकर रजनी भर तारा ।

(ख) रैनि अकेलि साथ नहिं सखी । कैसें जिऔं बिछोही पँखी ।।
बिरह सैचान भँवै तन चाँड़ा । जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा ।।
रकत ढरा आँसू गरा हाड़ भए सब संख ।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख ।।

(ग) चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराए पाँव तले
ऊँचे तरुवर से गिरे
बड़े-बड़े पियराए पत्ते
कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो –
खिली हुई हवा आई, फिरकी-सी आई, चली गई ।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **6**

ज़रा-सी आहट पाते ही वे एक साथ सिर उठा कर चौंकी हुई निगाहों से हमें देखती हैं – बिलकुल उन युवा हिरणियों की तरह, जिन्हें मैंने एक बार कान्हा के वन्य-स्थल में देखा था । किन्तु वे डरती नहीं, भागती नहीं, सिर्फ़ विस्मय से मुसकुराती हैं और फिर सिर झुकाकर अपने काम में डूब जाती हैं – यह समूचा दृश्य इतना साफ़ और सजीव है – अपनी स्वच्छ मांसलता में इतना संपूर्ण और शाश्वत – कि एक क्षण के लिए विश्वास नहीं होता कि आने वाले वर्षों में सब कुछ मटियामेट हो जाएगा – झोंपड़े, खेत, ढोर, आम के पेड़ – सब ।

अथवा

साहित्य का पांचजन्य समरभूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता । वह मनुष्य को भाग्य के आसरे बैठने और पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने की प्रेरणा नहीं देता । इस तरह की प्रेरणा देने वालों के वह पंख कतर देता है । वह कायरों और पराभव-प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समरभूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है ।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के उत्तर दीजिए : **4 + 4 = 8**

(क) गाड़ी पर सवार होने के बाद संवदिया के मन की क्या स्थिति हुई ? उस स्थिति से उबरने के लिए उसने क्या सोचा ?

(ख) कुटज के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? उसे 'गाढ़े का साथी' क्यों कहा गया है ?

(ग) "मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भुत, अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है ।" – कथन के आधार पर 'दूसरा देवदास' कहानी की नायिका पारो की मनोदशा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए ।

12. केशवदास **अथवा** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । **6**

अथवा

रामचंद्र शुक्ल **अथवा** पं. चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **तीन** के उत्तर दीजिए : **3 + 3 + 3 = 9**

(क) 'सूरदास की झोंपड़ी' कहानी में सूरदास की आर्थिक हानि कैसे हुई ? वह जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था ?

(ख) 'आरोहण' कहानी के आधार पर भूप दादा के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

(ग) 'बिस्कोहर की माटी' में लेखक ने गरमी और लू से बचने के लिए जिन उपायों का वर्णन किया है, क्या आप उन उपायों के प्रयोग के पक्ष में हैं ? तर्क सम्मत उत्तर दीजिए ।

(घ) 'अपना मालवा' के लेखक को क्यों लगता है कि हम जिसे विकास की औद्‌योगिक सभ्यता कहते हैं, वह उजाड़ अपसभ्यता है ? आपकी क्या मान्यता है ?

14. 'सूरदास की झोंपड़ी' कहानी में सूरदास के चरित्र की किन-किन विशेषताओं का चित्रण हुआ है ? उन्हें अपने शब्दों में लिखिए । **6**

अथवा

'पहाड़ों में जीवन अत्यंत कठिन होता है ।' 'आरोहण' पाठ के आधार पर सोदाहरण विवेचन कीजिए ।